GD (unit - 2)

03/10/2021

Inclusive education
(समावेशी शिक्षा)

बालक

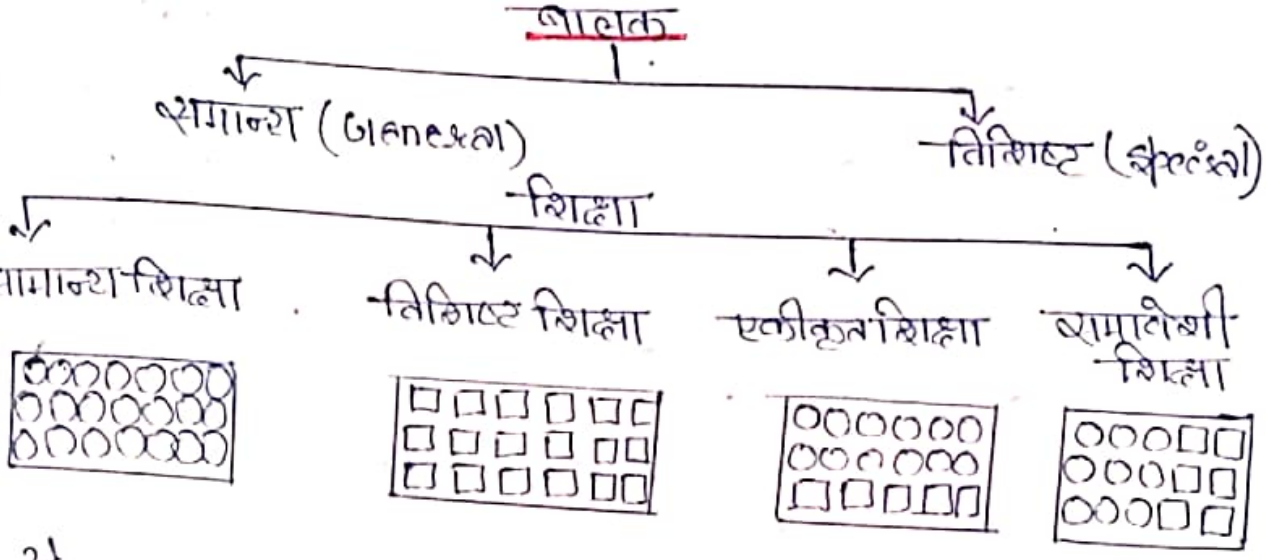

- सामान्य (General)
- विशिष्ट (Special)

शिक्षा

सामान्य शिक्षा	विशिष्ट शिक्षा	एकीकृत शिक्षा	समावेशी शिक्षा

30-10-21

- डिस्केलकुलिया (Dyscalculia) अधिगम disability से संबंधित होती है। इसमें गणना करने में समस्या होती है।
- डिस्लेक्सिया (Dyslexia) में पढ़ने में Problem होती है। eg :- saw / was > Left Right में Problem
- Dysgraphia (डिस्ग्रेफिया) - इसमें लिखने में Problem होती है।

⇒ शिक्षा से वंचित बच्चे कई तरह के वंचित हो सकते हैं। जैसे - धर्म के नाम पर, लिंग के नाम पर।

?/11/21

Concept of an Inclusive education :-

विद्यालय शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए समावेशी शिक्षा स्थापित किये जाते हैं. जहाँ पर सभी प्रकार के छात्र ज्ञान प्राप्त करते हैं और भावी जीवन के लिए तैयार होते हैं। वर्तमान समाज में विज्ञान एवं तकनीकी का समाज है। इसका प्रभाव समाज के प्रत्येक भाग में दिखाई पड़ता है। और

यह समस्त समस्याओं से निकालना और उनका हल खोजने के लिए विद्यालय एक महत्वपूर्ण स्थान है। जिसका निर्माण समाज के आदर्शों एवं हितों की पूर्ति के लिए किया जाता है। समावेश का दर्शन विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की सहायता करता है कि वे समाज के अच्छे सदस्य बने और वो समाज और विद्यालय को न्याय स्वरूप प्रदान करें। समावेश में समुदाय के प्रति अपनत्व (अपनापन) की भावना का विकास होता है। समावेशी उन सभी व्यवहारिक बातों को अपनाता है जो अच्छे शिक्षण में सक्रिय हो। समावेशी शिक्षा उस व्यवहार पर आधारित है कि लोग समावेशी समुदाय में मिलकर कार्य करें और उनमें जाति, धर्म, अयोग्यताओं का किसी भी प्रकार से भेदभाव न करें। समावेशी स्कूल ऐसा स्कूल होता है, जिसमें सभी बालक मुख्य धारा से जुड़े होते हैं। उन बालकों को मुख्यधारा से जोड़ने का अर्थ यह है कि जो बालक गंभीर रूप से असमर्थता रखते हैं, उन्हें विशेष विद्यालय में भेजा भी जा सकता है। इस प्रकार सभी छात्र शिक्षा के मुख्य धारा से जुड़ सकते हैं।

13/11/21 Need and Importance of Inclusive edu.

वर्तमान समय में जनसंख्या बढ़ने से बालकों की संख्या के साथ उनकी बढ़ती हुई विभिन्नताएँ भी एक समस्या का रूप ले रही है। इन सभी प्रकार के विभिन्नताओं को साथ लेकर सभी को समान शिक्षा प्रदान करना ही समावेशी शिक्षा का उद्देश्य है। यह शिक्षा भाषा, धर्म, लिंग,

संस्कृति तथा सामाजिक एवं शारीरिक मानसिक गुणों की विविधता वाले बालक को एक दूसरे से सीखने, सामाजिक रूप से संबंधित होने तथा समायोजित होने के बहुमूल्य अवसर प्रदान करती है। वर्तमान में समावेशी शिक्षा एक आवश्यकता बन गई है। शैक्षिक, पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास की दृष्टि से यह अत्यंत / बहुत ही महत्वपूर्ण है।

समावेशी शिक्षा के आवश्यकता और महत्व इस प्रकार है

(i) शिक्षा के स्तर को बढ़ाना
(ii) सामाजिक समानता
(iii) शिक्षा की सार्वभौमिकता
(iv) रोजगार के अवसरों में वृद्धि
(v) राष्ट्र की उन्नति या प्रगति
(vi) समाज के विकास के लिए
(vii) लोकतांत्रिक गुणों का अक्षुण्ण विकास
(viii) सामंजस्य जीवन का विकास
(ix) आधुनिक तकनीकों का प्रयोग

1-11-2021

1 Imp समावेशी शिक्षा के स्तर को बढ़ाना

समावेशी सबके लिए अवधारणा पर नहीं बल्कि सबके लिए गुणात्मक शिक्षा पर की अवधारणा पर भी आधारित है। इस शिक्षा प्रणाली में बच्चों के शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक, सांस्कृतिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है। इस प्रणाली में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को इस प्रकार से नियोजित किया जाता है कि प्रत्येक बच्चा अपना सम्पूर्ण विकास कर सके।

2. सामाजिक समानता :-

समावेशी शिक्षा समानता के सिद्धांत का अनुसरण करती है। स्कूल ही एक ऐसा स्थान है जहाँ पर सभी बच्चों को अकादमिक के द्वारा एकसमान शिक्षण कराया जाता है। यहाँ जाति, धर्म, लिंग, समुदाय भाषा मानसिक गुणों की विभिन्नता वाले बच्चों को एक साथ समान शिक्षण कराया जाता है। समावेशी शिक्षा शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक व सामाजिक रूप से बाधित बालकों को सभी के साथ शिक्षा प्रदान करने पर बल देती है।

3. शिक्षा की सार्वभौमिकता :-

शिक्षा को तभी सार्वभौमिक बनाया जा सकता है जब तक कि प्रत्येक बालक के गुणों, स्तर, तथा आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर शिक्षा का तैयार किया जाय। समावेशी शिक्षा सहयोग करने पर बल देती है। इसमें धर्म, जाति, भाषा, शारीरिक रूप से असमर्थ बालकों को भी सामान्य बालकों के साथ शिक्षा दिया जा सकता है।

18/11/2021

समावेशी शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व :-

1. रोजगार के अवसरों में वृद्धि :-

शिक्षा को नीतिकोपार्जन में एक सहायक यंत्र के रूप में माना जाता है। शिक्षित व्यक्ति किसी भी रोजगार को कुशलता के साथ कर सकता है। वही अशिक्षित व्यक्ति अपनी असमर्थता के कारण लाचार होता है। शिक्षा का प्रसार करना हमारी आवश्यकता है और समावेशी शिक्षा इस दिशा में एक प्रयास है।

5 राष्ट्र की उन्नति या प्रगति :-

शिक्षा किसी भी देश के विकास व प्रगति के लिए बहुत ही आवश्यक है। राष्ट्र के विकास एवं प्रगति के लिए मानवीय संसाधन (Human resources) का कुशल होना आवश्यक है। यदि कोई व्यक्ति या बालक शिक्षित है तो वह किसी-न-किसी क्षेत्र में रोजगार व कार्य करेगा। इसलिए समावेशी शिक्षा में सभी को शिक्षा प्रदान की जाती है। जिससे देश के प्रत्येक बालक शिक्षा प्राप्त करे जो कि राष्ट्र के प्रगति के लिए आवश्यक है।

6. समाज के विकास के लिए :-

शिक्षित ही समाज का निर्माण एवं विकास करते हैं। यदि समाज का विकास करना है तो सभी को शिक्षा में समाज के प्रत्येक बच्चों को शिक्षा प्रदान करने का प्रावधान है, जिससे कि वे सभी शिक्षित होकर रोजगार प्राप्त कर सके। व अच्छे समाज के निर्माण में सहायक हो सकें।

7. लोकतांत्रिक गुणों का विकास :-

समावेशी शिक्षा बच्चों के लोकतांत्रिक गुणों के अन्तर्गत प्रेम, सहभागना, सहयोग, सहनशीलता एक दूसरे का सम्मान इत्यादि आते हैं। समावेशी शिक्षा में सभी बच्चों को एक साथ एक ही कक्षा में शिक्षण करने से उन गुणों का (लोकतांत्रिक गुणों का) विकास संगत है। यह कक्षा से बाहर पारस्परिक गुणों क्रिया तथा व्यवहार में गतिशीलता व समायोजन को बल देती है।

8. व्यक्तिगत जीवन का विकास :-

यह शिक्षा व्यक्तिगत जीवन के विकास में सहायक होती है। बच्चों की मानसिकता एवं दृष्टिकोण में परिवर्तन करना समावेशी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। इस शिक्षा का केन्द्र बालक है। बालकों के संज्ञानात्मक, संवेगात्मक, सामाजिक व मानसिक विकास के लिए उसका विशेष महत्व है।

9. आधुनिक तकनीकों का प्रयोग :-

वर्तमान में कम्प्यूटर, प्रोजेक्टर, इंटरनेट आदि का प्रयोग साधारण सी बात हो गई है। शिक्षा के क्षेत्र में भी उसका प्रयोग होने लगा है। इस ज्ञान का व्यक्ति अपने व्यक्तिगत जीवन में प्रयोग करके रोजगार प्राप्त कर सकता है तथा अपने ज्ञान का विकास करता है।

समावेशी शिक्षा के उद्देश्य (Objectives of Inclusive ed

समावेशी शिक्षा द्वारा समाज के उन वर्गों की शिक्षा एवं विकास पर विचार किया गया है जो पहले इससे वंचित रहे हैं। या जिनकी आवश्यक ताओं को अनदेखा किया गया है। इसके द्वारा विकलांग बच्चों के व्यक्तिगत, सामाजिक, तथा रोजगार में बच्चों की पूरी क्षमता का विकास करने तथा अवसर देने की आवश्यकता को पूरा किया जाता है। जिनकी सीखने की गति कम है, उन्हें आसानी से सिखाया जाता है। इस शिक्षा प्रणाली से विशेष बच्चों की विशेष आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर उनके विकास को ध्यान में रखा जाता है।

→ समावेशी शिक्षा के उद्देश्य इस प्रकार से हैं —

(i) शिक्षा का अधिकार
(ii) सभी को शिक्षा के समान अवसर
(iii) असक्त (Disable) व बाधित बच्चों की क्षमताओं का विकास करना।
(iv) आत्मविश्वास व आत्मसम्मान की विकास करना
(v) सामाजिकता की भावना का विकास
(vi) असमर्थता से समर्थता की ओर ले जाना।

1. शिक्षा का अधिकार :—

अच्छी शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक बच्चों का अधिकार है। समावेशी शिक्षा, शिक्षा के अधिकार को प्रदान करने की अवस्था है। इसका मुख्य उद्देश्य सभी बच्चों को चाहे वो मानसिक सामाजिक, शारीरिक, संवेगात्मक रूप से लाचार हो। उन्हें एक समान व सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा प्रदान करना व बच्चे के अधिकार का सम्मान करना समावेशी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है।

2. सभी को शिक्षा के समान अवसर :—

समावेशी शिक्षा किसी वर्ग या समूह विशेष के लिए नहीं है। इसका मुख्य उद्देश्य बालकों के लिए उनमें समान शिक्षा प्रदान करना है। शिक्षण विधि या प्रविधि को इस प्रकार लचीला बनाया जाता है कि शिक्षा से कोई बच्चा वंचित न रह जाए। इस शिक्षा का केन्द्र बालक को माना गया है। शिक्षा प्रदान करने में बालकों की असमर्थता के ध्यान में रखा जाता है। जिससे सभी बच्चों को शिक्षण के समान अवसर प्राप्त हो सके। इससे पहले विशिष्ट बालकों के लिए

अलग स्कूलों की स्थापना का विचार था। जिस कारण माता-पिता को उन बच्चों को जो शारीरिक, मानसिक व सामाजिक रूप से असमर्थ है। इन विशिष्ट स्कूलों में प्रवेश व अन्य सुविधाओं के अभाव के कारण ये बच्चे शिक्षा का लाभ नहीं उठा पा रहे थे। लेकिन वर्तमान में समावेशी शिक्षा के कारण सभी बच्चों को शिक्षा प्रदान प्राप्त करने का अवसर प्रदान करती है।

3. असक्त व बाधित बच्चों की क्षमताओं का विकास

असक्त एवं बाधित बच्चे भी समाज के अंग है, उनमें भी अपनी योग्यता व कौशल पाये जाते हैं। समावेशी शिक्षा के माध्यम से इन बच्चों की क्षमताओं व योग्यताओं का विकास किया जा सकता है। बल्कि उनकी प्रतिभा के विकास के अवसर प्रदान किये जाने चाहिए तथा उन्हें उनकी असमर्थता को चुनौती के रूप में स्वीकार करने का समर्थन किया जाना चाहिए। उन्हें दान की आवश्यकता नहीं है बल्कि काम एवं सम्मान की आवश्यकता होती है। समावेशी शिक्षा उन बच्चों की क्षमता के विकास के अवसर प्रदान करती है। इसका उद्देश्य निःशक्त और बाधित बच्चों की प्रतिभा व क्षमता का विकास व प्रदर्शन करना है। जिससे वे भावी जीवन में दूसरों पर निर्भर न रहकर आत्मनिर्भर बन सके।

4. आत्मविश्वास या आत्मसम्मान की भावना का विकास करना

कोई भी व्यक्ति यदि शिक्षित है तो उसमें आत्मविश्वास स्पष्ट दिखाई देता है, जब व्यक्ति में

आत्मविश्वास होता है तो उसके बाद वह आत्म-सम्मान के लिए कार्य करता है। वह सामाजिक प्रतिष्ठा को बनाने का कार्य करता है। समावेशी शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर बनाना है।

5. सामाजिकता की भावना का विकास

पहले बाधित व निःशक्तता वाले बच्चों को पृथक शिक्षण कराया जाता था तथा उसके लिए पृथक विद्यालय खोले गये। इस पृथकता के कारण ये बच्चे सामाजिक रूप से भी पृथक होने लगे तथा इनमें हीनता की भावना आने लगी। समावेशी शिक्षा में सभी बच्चे एक साथ मिलकर सामूहिक रूप से अध्ययन करते हैं। इस प्रकार के वातावरण से ये बच्चे भी स्वयं को समाज का ही अंग मानते हैं तथा इनमें सामाजिकता की भावना का विकास होता है। समावेशी शिक्षा सामाजिक असमानता का खंडन करती है।

6. असमर्थता से समर्थता की ओर ले जाना

समावेशी शिक्षा में असमर्थ बालकों को सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा प्रदान की जाती है। ऐसे बच्चे यदि सामान्य बच्चों के साथ मिलकर शिक्षा प्राप्त करते हैं तो वह असमर्थता से समर्थता की ओर आ जाते हैं।

⇒ समावेशी शिक्षा की विशेषताएँ :—

(i) समावेशी शिक्षा वैसी शिक्षा है, जिसमें सामान्य व अन्य विशिष्ट बच्चे एक साथ शिक्षा प्राप्त करते हैं।

(ii) समावेशी शिक्षा शिक्षण की समानता तथा अवसर की जो असमर्थ व बाधित बच्चों को बढ़ी दिये गये, उनकी मूल रूप से शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने का आयाम है

(iii) यह शिक्षा में एक ऐसा रूप है, जिससे दिव्यांग बालकों को समान शिक्षा के अवसर प्राप्त हैं।

(iv) यह शिक्षा माता-पिता, अध्यापक, अभिभावक के सहयोग पर आधारित है।

27-11-21

(v) समावेशी शिक्षा अपंग, बाधित तथा सामान्य बालकों के मध्य स्वस्थ सामाजिक वातावरण तथा संबंध बनाने में सहायक है।

(vi) यह एक ऐसी व्यवस्था है, जिसके अन्तर्गत शारीरिक रूप से बाधित बालक भी सामान्य बालकों की भाँति महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

(vii) समावेशी शिक्षा का पाठ्यक्रम इस प्रकार तैयार किया जाता है कि शैक्षिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर यह बच्चों की क्षमताओं के आधार पर उसमें परिवर्तन किया जा सके।

(viii) सभी बच्चों में सामाजिकरण के गुणों का विकास होता है, जो एक कक्षा में एकसाथ मिलकर कार्य करते हैं। समावेशी शिक्षा में रणनीति इस प्रकार तैयार किया जाता है कि जिसमें बच्चों एक दूसरे का सहयोग मित्रता, सहानुभूति, सहजता करते हैं। उस प्रकार की गतिविधियों से बच्चों में सामाजिकरण के गुणों का विकास होता है।